FUNDAMENTAL AGRO S.CENTRE

(A UNIT OF AGRICULTURE)
Run & Managed By: ***H.H.L.Foundation***
Contact: 7366881924, Email: hhlfbihar@gmail.com, Website: www.hhlf.org.in
12 : AACTH0455JE20251, 80 G : AACTH0455JF20251

अब बिहार के किसान भी करेंगे वैनिला की खेती। इस से किसान होंगे समृद्ध।

वैनिला की खेती करने की विधि

1.विशेषता : वैनिला एक सुगन्धित पदार्थ है जो वैनिला ऑर्किड (फली) से प्राप्त होता है। जिस का प्रयोग खाने पीने की वस्तुओं में जैसे आइसक्रीम, होर्लिक्स, प्रोटीन पाउडर, केक, चॉकलेट, एनर्जी ड्रिंक्स तथा परफ्यूम, ब्यूटी सामिग्री इत्यदि में बड़े पैमाने पर की जाती है। यही नहीं बल्कि इस से बहुत सारी औषधियां और मसाले भी बनाए जाते हैं। इसलिए वैनिला औषधीय पौधों की श्रेणी में आता है। इस की खोज सैकड़ों साल पूर्व सर्वप्रथम मैक्सिको में की गयी थी। भारत में इस का आगमन तीन दशक पुराना है। भारत में वैनिला की खेती कई राज्यों में हो रही है। इन राज्यों के किसान वैनिला की खेती कर के आर्थिक रूप से समृद्ध होते जा रहे हैं। इस लिए हमारी संस्था ने बिहार के किसानों की समृद्धि के लिए "वैनिला कल्टीवेशन प्रोग्राम" को शरू करने का निर्णय लिया। वैनिला की खेती के लिए बिहार की जलवायु बहुत ही अनुकूल है। बिहार के किसानों के लिए वैनिला एक नगदी फसल होगी। वैनिला की खेती आने वाले समय में एक उद्योग का रूप धारण करेगी। जिस से हमारे किसान सशक्त हो सकेंगे। यह एक ऐसा फसल है जिस का फल और क्रीपर (लत्ती) दोनों बिकता है। इस के सूखे फली (**Vanilla Beans**) की कीमत **30** से **40** हज़ार रूपये प्रति किलो तक होती है। वैनिला दो साल के अंदर फूल और फल देने योग्य हो जाता है। इसे लगाने के बाद इस की देख भाल करना बहुत ज़रूरी है।

2.वैनिला की खेती हेतु भूमि का चयन: वैनिला की खेती परम्परागत तरीके से नहीं होती है। इसकी खेती वैज्ञानिक तरीके से अत्यन्त सावधानी पूर्वक की जाती है। इसमें किसान को अधिक मेहनत तो करनी ही पड़ती है साथ ही इसके कृषिकरण से पूर्व अन्य तकनीकी बिन्दुओं को ध्यान में रखना पड़ता है जैसे-मिट्टी की किस्म, पानी, क्षेत्र में नमी का स्तर, तापमान, भूमि का प्रकार, आधार, वृक्षों की उपलब्धता आदि । इसकी खेती हेतु वैसी भूमि उपयुक्त मानी जाती है जिसमें सड़ी गली जैविक मिट्टी की प्रचुरता अत्यधिक होती है। हालाँकि विभिन्न प्रकार की मिट्टियों जैसे-सैण्डी लोम से लेकर लैटेराइट किस्म की मिट्टियों में वैनिला उगाया जा रहा है।
प्रचुर कार्बनिक तत्वों और समुचित जल निकास की व्यवस्था के साथ दोमट मिट्टी वेनिला के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है। कार्बनिक तत्व और सड़े हुए घास-फूस पौधों के लिए पोषक तत्वों का मुख्य स्रोत होते हैं। इस प्रकार की मिट्टियाँ नर्म और नमीयुक्त होती है जो जड़ों को फैलने में सहायक होती है। यद्यपि वैनिला रेतीली से दोमट एवं लाल मिट्टी तक विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उगाई जा रही है लेकिन ढलवां जमीन पर भुरभुरी मिट्टी में इसकी बढ़त अच्छी होती है। शुद्ध मिट्टी, पथरीली जमीन, कठोर लैटेराइट्स एवं लवणीय तथा क्षारीय भूमि वैनिला की वृद्धि के लिए उपयुक्त नहीं है।

3.भूमि की तैयारी: वैनिला के कृषिकरण हेतु भूमि तैयार करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी लताओं को बढ़ने के लिए पर्याप्त आधार उपलब्ध हो । ये आधार बांस या पेड़ के खम्भों, छोटे आकार के पेड़, पौधे, शाखा, लकड़ी के खूँटे, लोहे के -पाईप हो सकते हैं। यदि वैनिला की खेती में सहारे के लिए पेड़-पौधों का आधार उपलब्ध कराने की योजना हो तो ये पेड़-पौधे वैनिला के कलमों के रोपण से बहुत पहले लगा दिये जाने चाहिए ताकि ये वैनिला की तलाओं को बढ़ने में समय पर सहायक हो सके । इसकी खेती के लिए प्रथम चरण में घर के बगल की भूमि का चुनाव करना अति आवश्यक होगा जो भूमि बेकार पड़ी है या फिर उसमें अन्य प्रकार की सब्जियाँ उगाई जा रही हो । अधिकाशतः ऐसी भूमि कम्पोस्ट तथा कार्बनिक तत्वों से समृद्ध होती है। परन्तु, इस बात का ध्यान अवश्य रखें-वैनिला की कृषि करने वाले भूमि में कच्चे गोबर की विद्यमानता इसके पौधों के लिए जहर से कम नहीं समझा जाता । इसके आसपास भी कच्चे गोबर के भंडारण से बचें । यह भी ध्यान रखें कि इस भूमि में पके हुए गोबर की मात्रा (दो वर्ष पूर्व का) 10% से ज्यादा नहीं हो । इस भूमि को कुदाल से एक फीट गहरा और एक फ़ीट चौड़ा गड्ढा करें । इसे एक सप्ताह तक सूर्य के प्रकाश में स्वतंत्र रूप से सूखने दें। तत्पश्चात् गेहूँ और कोकोपिट के महीन भूसे (उपलब्धता के आधार पर दोनों या दोनों में से कोई एक) एक किलोग्राम तथा तीन किलोग्राम 24 महीने पूर्व का सड़ा हुआ गोबर मिट्टी के साथ अच्छी तरह मिला दें और इसे गड्ढे में डाल दें। अब वैनिला के कलम को दोनों तरफ से तिरछा काट कर इस में हॉर्मोन का पाउडर लगा कर एक घंटे तक छोड़ दें। अब इस गड्ढे के बीचो बीच वैनिला के कलम की रोपाई करें। रोपाई के समय यह ध्यान रहे कि कलम का एक गिरह मिट्टी के अंदर तथा दूसरा गिरह मिट्टी के बराबर हो तथा मिट्टी के अंदर जाने वाले गिरह के पत्ते को आधा इंच छोड़ कर काट देना है। अब मिट्टी को अच्छी तरह बराबर करने के बाद उस में पानी का छिड़काव करें।

4.जीवन-काल: वैनिला की लता का जीवन-काल यों तो अधिक होता है किन्तु फसल के दृष्टिकोण से रोपण के यह 20 साल तक़ ही आर्थिक रूप से लाभकारी है। लगभग 20 साल की आयु होने के बाद वैनिला की बेल की उत्पादकता घटने लगती है। इसकी लता अप.ने आयुकाल में 15 मीटर से अधिक ऊँचाई तक बढ़ती है। इसलिए यह ध्यान दिया जाता है कि यह लता आधार खम्भों एवं आधार वृक्षों के डेढ़ से दो मीटर के इर्द-गिर्द ही लिपटती रहे। वैनिला को लगाने के लिए ऐसा समय आदर्श माना जाता है जब मौसम न तो ज्यादा बरसात वाला हो और न ही ज्यादा शुष्क । भारत में सितम्बर मध्य से नवंबर का महीना रोपण के लिए आदर्श माना जाता है। वैनिला 25-35° से० तापमान व नम जलवायु में सामान्य रूप से उत्पादन देता है। एक पौधा प्रत्येक वर्ष सामान्य रूप से 4-5 किलो सूखा वीन (पॉड्स) उत्पादित करता है।

"An Another Green Revolution is the Commercial Cultivation"